उर्दू सबके लिए

उर्दू लिपि से परिचय

उर्दू सबके लिए

उर्दू लिपि से परिचय

संपादक

रूप कृष्ण भट

क़ौमी काउन्सिल बराए फ़रोग़-उर्दू-ज़बान
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, माध्यमिक एव उच्च शिक्षा विभाग, भारत सरकार
पश्चिम खंड नं. 1, विंग न. 6, रा. कृ. पुरम, नई दिल्ली-110066
फोन 26109746, 26169416, 26103381, 26103938, 26179657
Website : www.urducouncil.nic.in E-mail : urducouncil@rediff.com

© क़ौमी काउंसिल बराए फ़रोग़–ए–उर्दू ज़बान
भारत सरकार

उर्दू सबके लिए

उर्दू लिपि से परिचय

संपादक

रूपकृष्ण भट

संसाधन व्यक्ति

श्री नज़ीर हसन
डा. के. एस. मुस्तफ़ा
श्री अबदुर रशीद
डा. एम. के. कौल
डा. नील अरुन दोषी
डा. मुकुल प्रियदर्शनी
डा. ऊषा शर्मा
श्रीमति तबस्सुम नक़ी

प्रथम संस्करण	:	जुलाई 2005
छठा पुनर्मुद्रण	:	जनवरी 2009
कापियाँ	:	16000
पब्लिकेशन सं.	:	1231

मुद्रण: एस. नारायण एण्ड संस, बी–88, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज–2, नई दिल्ली – 110020
on 70 GSM TNPL (Tamil Nadu News Print and Papers Ltd.)

क़ौमी काउन्सिल बराए फ़रोग़–उर्दू–ज़बान
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, भारत सरकार
पश्चिम खंड नं. 1, विंग न. 6, रा. कृ. पुरम, नई दिल्ली–110066
फोन 26109746, 26169416, 26103381, 26103938, 26179657
Website : www.urducouncil.nic.in E-mail : urducouncil@rediff.com

प्राक्कथन

क़ौमी काउंसिल बराए फ़रोग़–ए–उर्दू ज़बान उर्दू भाषा के विकास, विस्तार एवं प्रचार के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग की एक स्वायत्त संस्था है। उर्दू भारत की महत्त्वपूर्ण भाषाओं में से एक है और यह पूरे देश में बोली जाती है।

ऐसे बहुत से भारतीय हैं जो उर्दू भाषा जानते–समझते हैं, बोल सकते हैं, मगर वे उसकी लिपि नहीं जानते। उर्दू भाषा और उसकी लिपि को और अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए काउंसिल ने 2001 में दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से छह महीने का सर्टिफ़िकेट पाठ्यक्रम शुरू किया। यह पाठ्यक्रम अंग्रेज़ी और हिंदी माध्यम से उर्दू सिखाने के लिए तैयार किया गया है। अब इस पाठ्यकम को एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम में बदल दिया गया है। हज़ारों की तादाद में शिक्षार्थियों ने इस पाठ्यक्रम में दाख़िला लिया और पूरे देश से भारी संख्या में इस पाठ्यक्रम पर सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई हैं।

काउंसिल की यह कोशिश रही है कि इस कार्यक्रम के लिए

सर्वोत्तम पाठ्यकम तैयार करे जो पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को पूरा कर सके और भाषावैज्ञानिक दृष्टि से उचित हो। इस पाठ्यकम के लिए पर्याप्त मात्रा में विभिन्न प्रकार की सामग्री का विकास तथा उपयोग किया गया है। इस पाठ्यक्रम से जुड़े पिछले अनेक वर्षों के अनुभव, शिक्षार्थियों एवं अन्य संबंधित विशेषज्ञों के सुझाव एवं मतों के आधार पर समय–समय पर इस पाठ्यक्रम में संशोधन किए गए हैं। प्रस्तुत सामग्री शिक्षार्थियों को सर्वोत्तम सामग्री उपलब्ध कराने की दिशा में किए गए प्रयासों का एक हिस्सा है। **'उर्दू सबके लिए : उर्दू लिपि से परिचय,** शीर्षक पुस्तक को तैयार करते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि उर्दू लेखन–व्यवस्था के सभी पक्षों को उजागर किया जाए और ऐसी परिचित भाषा का इस्तेमाल किया जाए जो शिक्षार्थी आसानी से समझ सकें। इस सामग्री को तैयार करने में जिन विषय विशेषज्ञों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है, मैं उन सभी के प्रति अपना हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता हूँ। मैं अपने सहयोगियों **डॉ. रूपकृष्ण भट, श्रीमती शमा यज़दानी** और **श्रीमती ज़िशान फ़ातिमा** को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इतने कम समय में इस सामग्री को तैयार करने की ज़िम्मेदारी उठाई। आशा है कि उर्दू के शिक्षार्थी तथा अन्य शुभचिंतक इस पुस्तक को बहुत उपयोगी पाएँगे।

डॉ. अली जावेद
निदेशक

परिचय

यह पाठ्य–सामग्री मुख्य रूप से दूरस्थ अधिगम के माध्यम से उर्दू सीखने के लिए तैयार की गई है। इसमें उर्दू लिपि के पढ़ना और लिखना सिखाने पर बल दिया गया है। इस पाठ्य–सामग्री में कुल बीस पाठ हैं। हर पाठ के लिए उत्तर पत्रक (Response Sheets) भी हैं जो उन पाठों के साथ विद्यार्थियों को भेजे जाएँगे। उत्तर पत्रक तथा पुस्तक के माध्यम से उर्दू सीखने वाले उर्दू लिपि के आधारभूत नियमों की बेहतर और व्यापक समझ विकसित कर सकेंगे।

पाठों का संयोजन

इस पुस्तक का एक स्पष्ट और सीधा उद्देश्य है उर्दू सीखने वाले नए शिक्षार्थियों का उर्दू लिपि से परिचय कराना और लिपि की जटिलता से संबंधित उनकी समस्याओं का समाधान करना। उर्दू शिक्षण–पद्धति की परंपरागत पद्धति से हटकर इन पाठों में उर्दू वर्णक्रम का पालन नहीं किया गया है और भाषायी नियमों के आधार पर उर्दू लिपि की सरल ढंग से प्रस्तुति की गई है।

इन **बीस पाठों** में उर्दू के सभी वर्णों को शामिल किया गया है।

साथ ही उर्दू ध्वनियों को देवनागरी लिपि में भी दिया गया है जिससे उन ध्वनियों के सही उच्चारण में सुविधा हो सके। शिक्षार्थियों को उन हिंदी उदाहरणों पर विशेष ध्यान देना चाहिए जो उर्दू ध्वनियों के सही उच्चारण का नमूना प्रस्तुत करते हैं। हालाँकि इस पुस्तक के कुछ पाठों में उर्दू लिपि लिखने के बारे में टिप्पणियाँ दी गई हैं, फिर भी उत्तर पत्रक इस दृष्टि से पूरक भूमिका निभाते हैं और उर्दू में लिखने की व्यापक जानकारी देते हैं। शिक्षार्थी उत्तर पत्रकों में दिए गए हाथ के संचालन से संबंधित चरण–दर–चरण निर्देशों का अध्ययन करने के लिए पर्याप्त समय लगाएँ जिससे यह जानकारी मिल सके कि उर्दू लिपि को कैसे लिखा जाता है।

प्रत्येक पाठ के अंत में शब्दावली दी गई है जिसमें उन शब्दों का एक ही अर्थ दिया गया है जिनके एक से अधिक अर्थ हो सकते हैं या होते हैं। ऐसा संक्षेपण की दृष्टि से किया गया है। इस पुस्तक में केवल उन्हीं शब्दों के अर्थ दिए गए हैं जो सबसे ज़्यादा प्रचलित हैं।

उर्दू लिपि की सामान्य विशेषताएँ

नए शिक्षार्थियों को इन बिंदुओं पर ध्यान देना चाहिए।

1) उर्दू लिपि में वर्णों को मिलाकर लिखा जाता है तथा यह लिपि दाएँ से बाईं तरफ लिखी जाती है। जबकि हिंदी की लिपि में वर्ण अलग–अलग लिखे जाते हैं और वे बाएँ से दाईं तरफ़ लिखे जाते हैं।

2) प्रत्येक उर्दू वर्ण का एक नाम है जो उस वर्ण द्वारा प्रदर्शित

ध्वनि या आवाज़ से शुरू होता है। जैसे ज़ाल (ज़), नून (न) आदि।

3) कुछ उर्दू वर्णों को उनके मिलते–जुलते आकार के आधार पर एक साथ एक समूह में रखा गया है। उर्दू में वर्णों के भिन्न–भिन्न कई समूह हैं। किसी भी एक समूह में आने वाले वर्णों की कुछ मूल आकृति होती है। लेकिन वर्ण के ऊपर, नीचे या बीच में लगाए गए बिंदुओं की संख्या के द्वारा उनमें अंतर किया जाता है।

4) कई उर्दू अक्षर एक जैसी ध्वनियों को प्रदर्शित करते हैं, जैसे – :

— **ते और तोए वर्ण 'त' ध्वनि को दर्शाते हैं।**

— **से, सीन तथा स्वाद 'स' ध्वनि को दर्शाते हैं।**

— **हे तथा छोटी हे 'ह' ध्वनि को दर्शाते हैं।**

— **ज़ाल, ज़े, ज़ोए तथा ज़्वाद 'ज़' ध्वनि को दर्शाते हैं।**

यहाँ इन सभी वर्णों की विस्तृत चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। इस पुस्तक के पाठों में इन वर्णों की विस्तृत चर्चा की गई है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि शिक्षार्थियों को शब्दों की सही वर्तनी को समझकर याद रखने की आवश्यकता है क्योंकि श्रुति समभिन्नार्थक शब्दों (ऐसे शब्द जो सुनने में एक समान हों, परंतु उनके अर्थ भिन्न हों) की ग़लत वर्तनी अर्थ का अनर्थ कर सकती है।

5) उर्दू वर्णों को दो समूहों में बाँटा जा सकता है – **योजक** और

अयोजक

क) योजक वे वर्ण हैं जिन्हें शब्द में अगले वर्ण के साथ जोड़ा जाता है। कुछ योजक दूसरे वर्णों के साथ सीधे तौर पर जुड़ते हैं जबकि बाकी योजक एक छोटी रेखा के रूप में जुड़ते हैं जिसे 'शोशा' कहा जाता है।

उर्दू एक रेखीय लिपि नहीं है यानी शब्द के सभी वर्ण एक के बाद एक रूप में नहीं जुड़ते। योजक वर्ण अक्सर एक–दूसरे के ऊपर या नीचे जुड़ते हैं। इसलिए शिक्षार्थियों को इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि वर्ण किस प्रकार जुड़ते हैं (शोशे के साथ और शोशे के बिना) और वे एक–दूसरे के साथ कहाँ जुड़ते हैं।

ख) अयोजक वे वर्ण हैं जो शब्द में आगे वाले वर्णों के साथ नहीं जुड़ते। हालाँकि अयोजक आगे वाले वर्णों के साथ कभी आपस में नहीं जुड़ते (चाहे योजक हों या अयोजक) मगर वे अपने से पहले वाले योजक के साथ अवश्य जुड़ते हैं। उर्दू वर्णमाला में 9 अयोजक हैं।

6) उर्दू वर्ण जब दूसरे वर्णों के साथ जुड़ते हैं तब उनकी आकृति में बदलाव आता है। दूसरे शब्दों में, एक वर्ण के लघु रूपों को विशिष्ट स्थितियों में इस्तेमाल किया जाता है। वर्ण का लघु रूप इस बात से नियंत्रित होते हैं कि उसे किस समूह या एक वर्ण के साथ जोड़ा गया है। उर्दू वर्ण निम्नलिखित आधार पर अपनी आकृति बदलते हैं –

— **आरंभिक स्थिति**: शब्द के शुरू में जहाँ वह अपने बाद वाले वर्ण से जुड़ता है।

— **मध्य स्थिति**: शब्द के बीच में, जहाँ वह अपने बाद वाले वर्ण से जुड़ता है।

— **अंतिम स्थिति**: शब्द के अंत में, जहाँ वह अपने से पहले वाले वर्ण के साथ जुड़ता है।

— जब वर्ण किसी भी तरफ़ (पहले या बाद में) किसी वर्ण से नहीं जुड़ते तब वे अपने पूरे रूप में या स्वतंत्र रूप में आते हैं। कुछ वर्ण शब्द के अंत में अपने पूरे रूप में आते हैं।

यहाँ जो नियम बताए गए हैं उनका मुख्य उद्‌देश्य केवल सामान्य दिशा–निर्देश देना है। आगे आने वाले पाठों में इन नियमों के बारे में विस्तार से एवं स्पष्ट रूप से बताया जाएगा।

मुद्रित और लिखित उर्दू लिपि पर टिप्पणियाँ

क) साफ़ और पढ़े जा सकने वाले (सुपाठ्य) हस्तलेख के लिए यह ज़रूरी है कि शिक्षार्थी उर्दू शब्दों को सहज गति से लिखने की आदत का विकास करें। ध्वनि निर्देशक चिह्न और शब्द के ऊपर या नीचे लगने वाले बिंदु मूल आकृति को लिखने के बाद ही लगाए जाएँ।

ख) उर्दू में मुद्रण या छपाई और लेखन की कई सुलेखन शैलियाँ हैं, जैसे ख़ते–नस्तालीक़ (जिसका उपयोग यहाँ किया गया है)।

मुद्रित और हस्तलिखित उर्दू में महतवपूर्ण अंतर है बजाय मुद्रित

लिपि के अनुकरण के। शिक्षार्थियों को उत्तर पत्रक में बताई गई हस्तलिखित शैली का अभ्यास करना चाहिए।

ग) उर्दू की मुद्रित पाठ्य–सामग्री में कई बार कुछ चिह्न छोड़ दिए जाते हैं। चूँकि यह पुस्तक प्रारंभिक शिक्षार्थियों के लिए है इसलिए इस पुस्तक में सभी चिह्नों को शामिल किया गया है जिससे पाठक संदर्भ के द्वारा, जिसमें वह आया है, शब्दों के सही उच्चारण (और उसके अर्थ का निर्धारण करने में सक्षम हो सकें।

आशा है कि यह पुस्तक शिक्षार्थियों को उर्दू भाषा की लिखित व्यवस्था के बारे में पर्याप्त अंतर्दृष्टि प्रदान करेगी। यह पुस्तक उन्हें उर्दू के पठन–लेखन के आधारभूत नियम सिखाएगी तथा उन्हें इस तरह तैयार करेगी जिससे वे अपने आप छोटे–छोटे वाक्यों को पढ़–लिख सकेंगे और पाठ्यक्रम के दूसरे चरण में प्रवेश ले सकेंगे।

प्रतिष्ठित भाषावैज्ञानिकों एवं भाषा–शिक्षकों द्वारा इस पाठ्य–सामग्री का निर्माण किया है जो पिछले कई दशकों से देश के कई प्रतिष्ठित संस्थानों से जुड़े हैं तथा काउंसिल द्वारा आयोजित कई कार्यशालाओं में प्रत्यक्ष रूप से भागीदार रहे हैं। ये है – **श्री नज़ीर हसन, डॉ. अब्दुर रशीद, डॉ. के. एस. मुस्तफ़ा, डॉ. एम. के. कौल, श्री नील अरुण दोषी और श्रीमती तबस्सुम नक़ी।**

डॉ. अब्दुर रशीद के साथ डॉ. **मुकुल प्रियदर्शिनी**, डॉ. **उषा शर्मा** ने हिंदी रूपांतर के लिए आवश्यक शैक्षणिक योगदान दिया तथा अनुवाद करने में भी सहायता की। प्रतिष्ठित भाषावैज्ञानिक **प्रो. ओंकार एन. कौल**, ने भी इस पुस्तक के विभिन्न पक्षों पर अपने सुझाव दिए।

काउंसिल इन सभी विद्वानों के प्रति उनके अमूल्य सहयोग के लिए आभार प्रकट करती है। हमें आशा है कि सामान्य शिक्षार्थी और अन्य उर्दू भाषा प्रेमियों के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

डॉ. रूपकृष्ण भट

विषय – सूची

प्राक्कथन 5
परिचय 7
उर्दू वर्णमाला और देवनागरी लिपि – अंतरण 17

पाठ – 1 19
पाठ – 2 23
पाठ – 3 29
पाठ – 4 34
पाठ – 5 40
पाठ – 6 44
पाठ – 7 47
पाठ – 8 50
पाठ – 9 52
पाठ – 10 55
पाठ – 11 63
पाठ – 12 68
पाठ – 13 74
पाठ – 14 78
पाठ – 15 82
पाठ – 16 87
पाठ – 17 91
पाठ – 18 96
पाठ – 19 108
पाठ – 20 114

उर्दू वर्णमाला का परंपरागत क्रम 118
विराम–चिह्न, संक्षिप्त रूप और अंक 119

उर्दू वर्णमाला और देवनागरी लिपि – अंतरण

नाम	वर्ण	अंतरण
अलिफ़	ا	स्वर के लिए प्रयुक्त
बे	ب	ब
पे	پ	प
ते	ت	त
टे	ٹ	ट
से	ث	स
जीम	ج	ज
चे	چ	च
हे	ح	हे
ख़े	خ	ख़
दाल	د	द
डाल	ڈ	ड
ज़ाल	ذ	ज़
रे	ر	र
ड़े	ڑ	ड़
ज़े	ز	ज़
झ़े	ژ	झ़

सीन	س	स
शीन	ش	श
स्वाद	ص	स
ज़्वाद	ض	ज़
तोए	ط	त
ज़ोए	ظ	ज़
ऐन	ع	स्वर के लिए प्रयुक्त
ग़ैन	غ	ग़
फ़े	ف	फ़
काफ़	ق	क़
क़ाफ़	ک	क
गाफ़	گ	ग
लाम	ل	ल
मीम	م	म
नून	ن	न
वाओ	و	व
छोटी हे	ہ	ह
छोटी ये	ی	य / ई
बड़ी ये	ے	य / ए , ऐ

पाठ 1

अलिफ़ ا

ध्वनि	वर्ण का नाम	वर्ण
केवल स्वरों को लिखते समय प्रयोग	अलिफ़	ا

अलिफ़ ا वर्ण दीर्घ स्वर की आवाज़ देता है।

अलिफ़ ا उर्दू वर्णमाला का पहला वर्ण है। यह शब्द के बीच में और अंतिम स्थान पर एक सामान्य खड़ी रेखा की तरह ऊपर से नीचे की ओर लिखा जाता है। यह दीर्घ स्वर **आ** की आवाज़ देता है, जैसे – हिंदी में **तार**।

अंत	**मध्य**
ا	ا
आ	आ

शब्द के शुरू में **अलिफ़** ا को **मद** ٓ नामक चिह्न की मदद से दीर्घ स्वर के रूप में लिखा जाता है। यह चिह्न

अलिफ़ ا के ऊपर लगाया जाता है।

आ آ

❖ ❖ ❖

रे ر समूह

नीचे दी गई तालिका में चार व्यंजन वर्ण दिए गए हैं। इन वर्णों को शब्द में आगे आने वाले वर्णों के साथ जोड़कर नहीं लिखा जाता। इसलिए इन्हें अयोजक कहा जाता है

ध्वनि	नाम	वर्ण
र	रे	ر
ड़	ड़े	ڑ
ज़	ज़े	ز
झ़	झ़े (अंग्रेजी के शब्द विझ़न vision की तरह)	ژ

नोटः— देखें कि **अलिफ़** ا को **मद** ٓ की सहायता से प्रारंभिक स्थान पर कैसे लिखा जाता है।

آ

नीचे दिए गए उदाहरणों में दीर्घ स्वर के रूप में **अलिफ़** ا को शब्द के शुरू, बीच और अंत में **रे** ر समूह के वर्णों वाले शब्दों में लिखा गया है।

अंत	**मध्य**	**आरंभ**
آرا	راز	آڑ
आरा	राज़	आड़

नीचे दिए गए उदाहरणों में **रे** ر समूह के वर्णों का प्रयोग शब्द के शुरू, बीच और अंत में किया गया है

अंत	**मध्य**	**आरंभ**
آزار	آڑا	راز
आज़ार	आड़ा	राज़

शब्दावली

आरा	آرا
आड़	آڑ
आड़ा	آڑا
दुख	آزار
राज़	راز

❖ ❖ ❖

पाठ 2

दाल د समूह

दाल د समूह में तीन वर्ण हैं। ये तीनों वर्ण अयोजक हैं।

ध्वनि	वर्ण का नाम	वर्ण
द	दाल	د
ड	डाल	ڈ
ज़	ज़ाल	ذ

दाल د और **रे** ر समूह की आकृति के अंतर पर विशेष ध्यान दीजिए।

सभी अयोजकों की तरह **दाल** د समूह के वर्ण शब्द के आरंभिक, मध्य और अंतिम स्थान पर अपनी आकृति नहीं बदलते।

अंत	मध्य	आरंभ
داد	دادا	دار
दाद	दादा	दार

कुछ और उदाहरण

ڈار	دارا
डार	दारा

वाओ و

वाओ **و** दो अलग ध्वनियों को दर्शाता है –

1) अर्ध स्वर के रूप में यह **'व'** की आवाज़ देता है (जैसे हिंदी में **वर्षा**)।

2) दीर्घ स्वर के रूप में यह **'ओ'** की आवाज़ देता है (जैसे हिंदी में **ओर, मोर, दो**)। 'ऊ' की आवाज़ (जैसे हिंदी

में **ऊदा, सूना, आलू**) तथा **'औ'** की आवाज़ (जैसे हिंदी में **औरत, कौन, नौ**) देता है।

वाओ و एक अर्ध स्वर 'व' के रूप में

नीचे दिए गए उदाहरणों में **वाओ** वर्ण و **व** की आवाज़ देता है। इस बात पर ध्यान दीजिए कि शब्द के शुरू और बीच में वर्ण अपनी आकृति नहीं बदलते।

अंत	मध्य	आरंभ
वाओ (अंतिम रूपों के उदाहरण पाठ 19 में देखिए)	آواز आवाज़	وار वार

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि **वाओ** و **ओ, ऊ** तथा **औ** दीर्घ स्वर के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं।

वाओ و दीर्घ स्वर 'ओ' के रूप में

नीचे दिए गए उदाहरणों में **वाओ** و **ओ** ध्वनि को दर्शाता है। शब्द के शुरू, बीच और अंत में **ओ** की स्थिति पर

ध्यान दीजिए।

अंत	मध्य	आरंभ
دو	روز	اور
दो	रोज़	ओर

आगे दिए गए उदाहरण पर ध्यान दीजिए कि **वाओ** و को शब्द के शुरू में अलिफ़ की सहायता से किस प्रकार लिखा गया है।

वाओ و **दीर्घ स्वर** 'ऊ' **के रूप में**

दिए गए उदाहरणों में **वाओ** و **ऊ** की आवाज़ देता है। ध्यान दीजिए कि **उलटा पेश** ٗ का चिह्न – **ऊ** की आवाज़ दर्शाने के लिए प्रयुक्त किया जाता है और इसे **वाओ** و के ऊपर लगाया जाता है।

अंत	मध्य	आरंभ
رُو	دُور	اُودا
रू	दूर	ऊदा

वाओ و दीर्घ स्वर 'औ' के रूप में

दीर्घ स्वर **'औ'** के लिए आगे वाले वर्ण पर ज़बर लगाया जाता है।

अंत	**मध्य**	**आरंभ**
رَو	دَور	اَور
रौ	दौर	और

कुछ और उदाहरण

زور	آڑُو	آزاد
ज़ोर	आड़ू	आज़ाद
آرزُو	روڈ	ڈور
आरज़ू	रोड	डोर

शब्दावली

दाद	داد	दार	دار
दारा	دارا	दादा	دادا

रौ	رَو	डार	ڈار
वार	وار	ऊदा	اُودا
आवाज़	آواز	दूर	دُور
आज़ाद	آزاد	रू	رُو
आड़ू	آڑُو	ओर	اور
ज़ोर	زور	रोज़	روز
डोर	ڈور	दो	دو
रोड	روڈ	और	اَور
आरज़ू	آرزُو	दौर	دَور

पाठ 3

लघु स्वर

आप **आ** آ **ओ** او **ऊ** اُو और **औ** اَو – ये चार स्वर सीख चुके हैं। इस पाठ में तीन लघु स्वर '**अ**', '**इ**' और '**उ**' के बारे में बताया जाएगा। इन स्वरों को वर्ण के ऊपर और नीचे चिह्न लगाकर दर्शाया जाता है।

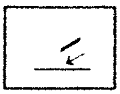

ज़बर

ज़बर [ـَ] का प्रयोग वर्ण के ऊपर लघु स्वर '**अ**' (जैसे हिंदी **बल**) के लिए किया जाता है।

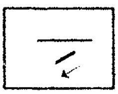

ज़ेर

ज़ेर [ـِ] का प्रयोग लघु स्वर '**इ**' के लिए (हिंदी **गिर** की तरह) वर्ण के नीचे किया जाता है।

पेश

पेश [ـُ] का प्रयोग लघु स्वर '**उ**' के लिए (हिंदी **पुल** की तरह) वर्ण के ऊपर किया जाता है।

नीचे दिए गए उदाहरणों में देखें कि ऊपर बताए गए लघु स्वरों को शब्द के शुरू में **अलिफ़** ا की मदद से दर्शाया जाता है। दूसरे शब्दों में, जब कोई शब्द स्वर से शुरू होता है तो शब्द के शुरू में **ज़बर, ज़ेर** या **पेश** के साथ **अलिफ़** का प्रयोग होता है।

अंत	**मध्य**	**आरंभ**
..	دَر	اَز
..	दर	अज़
..	رِدا	..
..	रिदा	..
..	دُر	اُردُو
..	दुर	उर्दू

ध्यान दें कि उर्दू में लघु स्वर (**ज़बर, ज़ेर और पेश**) जब शब्द के अंत में आते हैं तो उनका उच्चारण नहीं होता।

शब्द के शुरू में आने वाले सभी स्वरों को **अलिफ़** ا की

मदद से लिखा जाता है। अब तक जिन स्वरों की चर्चा की गई है वे शब्द के शुरू में इस प्रकार लिखे जाएँगे :-

اُو	اَو	او	اُ	اِ	اَ	آ
ऊ	औ	ओ	उ	इ	अ	आ

कुछ और उदाहरण

अंत	मध्य	आरंभ
زَر	دَراز	ڈَر
ज़र	दराज़	डर
رَوا	وَر	ذَرا
रवा	वर	ज़रा

❖ ❖ ❖

^

जज़्म

जज़्म चिह्न का प्रयोग व्यंजन युग्म के लिए होता है। उदाहरण के लिए **दर्द** دَرْد शब्द में जज़्म का प्रयोग बताता है कि **रे** ر और अंतिम **दाल** د के बीच कोई स्वर नहीं है।

उदाहरण

अंत	मध्य	आरंभ
وارْڈ	زَرْد	دَرْد
वार्ड	ज़र्द	दर्द

शब्दावली

मोती	دُر	दरवाज़ा	دَر
स्वर्ण, सोना	زَر	से	اَز
दराज़	دَراز	चादर	رِدا

पीला	زَرْد	वर	وَر
पीड़ा, दुख	دَرْد	ज़रा	ذَرا
		वार्ड	وارڈ

पाठ 4

जीम ج समूह

इस पाठ में **जीम** ج समूह के वर्णों के बारे में बताया जा रहा है। ये वर्ण 'योजक' हैं यानी शब्द लिखते समय इन वर्णों को आगे वाले वर्ण के साथ जोड़कर लिखा जाता है। इस बात पर ध्यान दें कि इन वर्णों के पूरे रूप और लघु रूप की आकृति समान है। केवल बिंदु लगाकर वर्णों में अंतर किया जाता है।

लघु रूप	**ध्वनि**	**नाम**	**वर्ण**
جـ	ज	जीम	ج
چـ	च	चे	چ
حـ	ह	हे	ح
خـ	ख़	ख़े	خ

अन्य योजकों की तरह **जीम** ج समूह के वर्ण शब्द के शुरू और बीच में लघु रूप में लिखे जाते हैं तथा शब्द के अंत

में पूरे रूप में लिखे जाते हैं। आगे दिए गए उदाहरण में इस बात पर ध्यान दें कि **अलिफ़ ا** को किस तरह लघु रूप के साथ जोड़ा गया है। अलिफ़ एक सहज गति से नीचे से ऊपर की तरफ़ लिखा जाता है।

उदाहरण –

ج + ا = جا

उदाहरण–

جارج जार्ज	جار जार	جاڑا जाड़ा	جا जा
خار ख़ार	چادر चादर	چار चार	راجا राजा

जैसे कि पहले चर्चा की जा चुकी है कि **अलिफ़ ا**, **वाओ و**, **रे ر** समूह और **दाल د** समूह के वर्ण अयोजक हैं यानी ये शब्द में अपने आगे वाले वर्णों के साथ नहीं जुड़ते। उदाहरण के लिए इस बात पर ध्यान दें कि **वाओ و जीम ج** समूह के वर्णों के साथ किस तरह जुड़ता है।

چوٗرا	چَوڑا	چور	جوڑا	جو
चूरा	चौड़ा	चोर	जोड़ा	जो

اَچار	آج	راجوٗ	حوٗر
अचार	आज	राजू	हूर

رِواج	رُخ	دوٗج	روٗح
रिवाज	रुख़	दूज	रूह

अयोजकों में, विशेष रूप से **रे** ر समूह और **दाल़** د, समूह के वर्ण जब अपने से पहले वाले वर्णों के साथ जुड़ते हैं तो उनकी आकृति बदल जाती है।

दाल د समूह के वर्ण जब अपने से पहले वाले वर्ण के साथ जुड़ते हैं तो उनका रूप इस प्रकार बदल जाता है –

अंत	**मध्य**	**आरंभ**
ر	ر	د

उदाहरण के तौर पर नीचे दिए गए शब्दों पर ध्यान दें और देखें कि **दाल** د समूह के वर्ण शब्द के बीच में और अंत में आने पर अपना रूप किस प्रकार बदलते हैं –

وَاحِد	جُدا	خُدا	حَد
वाहिद	जुदा	ख़ुदा	हद

रे ر समूह के वर्ण जब अपने से पहले वाले वर्ण के साथ जुड़ते हैं तो उनका लघु रूप इस प्रकार होता है–

अंत	**मध्य**	**आरंभ**
ـر	ـر	ر

उदाहरण–

آخِر	چَرچ	خَر	جَڑ
आख़िर	चर्च	ख़र	जड़

नीचे दिए गए शब्दों की तुलना कीजिए और देखिए कि **दाल** د और **रे** ر समूह के वर्ण शब्द के बीच में आने पर

जब अपने से पहले वाले समूह के साथ जुड़ते हैं तो उनके लघु रूपों में अंतर होता है –

جُڑا	جُدا
जुड़ा	जुदा

इस बात पर ध्यान दें कि **जीम** ج समूह के वर्ण अपने समूह के अन्य वर्णों के साथ किस तरह जुड़ते हैं।

جَج	حَج	چَچا
जज	हज	चचा

कुछ और उदाहरण

دوزَخ	خو	جَو
दोज़ख़	ख़ू	जौ
چَرخا	چَرخ	خَرچ
चरख़ा	चर्ख़	ख़र्च

शब्दावली

गधा	خَر	जार्ज (नाम)	جارْج
वाजिद (नाम)	واجِد	काँटा	خار
नरक	دوزَخ	परी	حوُر
आसमान	چَرْخ	सीमा	حَد
		अकेला	واحِد

❖ ❖ ❖

पाठ 5

सीन س समूह

इस पाठ में दो वर्णों के बारे में बताया जा रहा है। ये वर्ण आकृति में तो एक जैसे होते हैं लेकिन बिंदु लगाकर उनमें अंतर किया जाता है।

लघु रूप	ध्वनि	नाम	वर्ण
سـ	स	सीन	س
شـ	श	शीन	ش

उदाहरण–

روس	داس	دَس	اُس	آس
रूस	दास	दस	उस	आस
جاسوس	جوش	رَوِش	راس	اوس
जासूस	जोश	रविश	रास	ओस
شاد	سارا	سارَس	سَرْد	ساس
शाद	सारा	सारस	सर्द	सास

شَرَر	سَزا	آسرا	سَدا
शरर	सज़ा	आसरा	सदा
شوخ	سَچ	سورج	خَراش
शोख़	सच	सूरज	ख़राश

सीन س और **शीन** ش इस तरह भी लिखे जाते हैं।

सीन س ओर **शीन** ش दोनों को किसी भी तरीक़े से लिखा जा सकता है।

خَراش / خَرش   سَزا / سَزا

कुछ और उदाहरण

وَرزِش	سَرحَد	شَشدَر	سُسَر
वर्ज़िश	सरहद	शशदर	सुसर

شور	حَسَد	حِس	دَرْس
शोर	हसद	हिस	दर्स

❖ ❖ ❖

ّ

तशदीद

इस चिह्न को **तशदीद** ّ कहा जाता है। इसे उन वर्णों के ऊपर लगाया जाता है जिन्हें दो बार बोला जाता है। जैसे हिंदी के कच्चा, छुट्टी, पक्का, चम्मच शब्द। आइए नीचे दिए गए उदाहरण से यह समझने की कोशिश करते हैं कि इस तरह के शब्दों में तशदीद का इस्तेमाल किस तरह किया जाता है –

سچّا = ا + چ + چ + س

सच्चा

ऊपर दिए गए शब्द में **चे** چ **च्** का उच्चारण दो बार हो

रहा है। शब्द लिखते समय एक **चे** چ लिखा नहीं जाता और इस वर्ण के ऊपर तशदीद का चिह्न लगा दिया जाता है।

سَجّاد	حَسّاس	رَسّا	اَڈّا
सज्जाद	हस्सास	रस्सा	अड्डा

शब्दावली

पाठ	دَرْس	पसंद	راس
इंद्रिय	حِس	ढंग	رَوِش
ईर्ष्या	حَسَد	चिंगारी	شَرَر
ऊंची आवाज़	شور	खरोंच	خَراش
संवेदनशील	حَسّاس	चंचल	شوخ
सीमा	سَرحَد	चकित	شَشدَر
		कसरत	وَرزِش

❖ ❖ ❖

पाठ 6

स्वाद ص समूह

इस समूह में दो वर्ण हैं जिनमें बिंदु के ज़रिये अंतर किया जाता है। ध्यान दें कि **सीन** س और **स्वाद** ص का उच्चारण एक जैसा होता है यह हिंदी शब्द 'सुख' की तरह 'स' की आवाज़ देता है।

ज़्वाद ض का उच्चारण ذ और ز वर्णों की तरह होता है और यह 'ज़' ز की आवाज़ देता है।

स्वाद ص समूह के वर्णों का प्रयोग अक्सर अरबी मूल के शब्दों में होता है।

उदाहरण

लघु रूप	ध्वनि	नाम	वर्ण
صـ	स	स्वाद	ص
ضـ	ज़	ज़्वाद	ض

कुछ और उदाहरण

صَدا	صَدْر	ضَروْر
सदा	सद्र	ज़रूर
حاضِر	حُضوْر	ضِد
हाज़िर	हुज़ूर	ज़िद

इस बात पर ध्यान दें कि **स्वाद** ص और **ज़्वाद** ض समूह के वर्णों के लघु रूप जब **रे** ر समूह के साथ जुड़ते हैं तो उन्हें शोशे के बिना लिखा जाता है। लघु रूप को जोड़ने वाली लाइन/रेखा को शोशा कहा जाता है। अन्य स्थितियों में या ऊपर दिए गए उदाहरणों में लघु रूप को जोड़ने वाली रेखा (शोशा) आवश्यक है।

उदाहरण

ضَرَر	اِصرار	ضَروْر
ज़रर	इसरार	ज़रूर

नीचे दिए गए उदाहरणों को पढ़ें। इस बात पर ध्यान दें कि ये शब्द उच्चारण की दृष्टि से एक जैसे हैं लेकिन इनके अर्थ अलग–अलग हैं।

صَدا	سَدا
सदा = आवाज़	सदा = हमेशा

शब्दावली

धरती	اَرْض	अध्यक्ष	صَدْر
हमेशा	سَدا	सौ	صَد
		व्यक्ति	شَخْص
		आग्रह	اِصرار
		नुक़सान	ضَرَر

❖ ❖ ❖

पाठ 7

फ़े ف समूह

फ़े ف समूह के वर्णों के अपने–अपने पूरे रूप हैं। इन वर्णों के लघु रूप एक समान हैं। इन वर्णों के लघु रूपों में केवल बिंदुओं की संख्या का अंतर है। **फ़े** पर एक बिंदु लगता है जबकि क़ाफ़ पर दो बिंदु लगाए जाते हैं।

लघु रूप	**ध्वनि**	**नाम**	**वर्ग**
ف	फ़	फ़े	ف
ق	क़	क़ाफ़	ق

उच्चारण पर टिप्पणी – इस बात पर ध्यान दें कि **क़ाफ़** ق पश्च कंठ्य ध्वनि है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि गले के जिस हिस्से से 'क' बोला जाता है, उससे भी पीछे जाकर 'क़' बोला जाता है। आप जानते ही हैं कि हिंदी में उर्दू की कुछ ध्वनियों को नुक़्ता लगाकर दिखाया जाता है। जैसे क़ ख़, ग़, ज़, फ़। फ़ और क़ उन्हीं में से दो ध्वनियाँ हैं जिनका उच्चारण

हिंदी के 'फ' और 'क' से भिन्न है।

उदाहरण

अंत	मध्य	आरंभ
حَرف	وَفا	فَرق
हर्फ़	वफ़ा	फ़र्क़
وَرَق	وَقت	قاش
वरक़	वक़्त	क़ाश

कुछ और उदाहरण

فَرار	فَوج	اُف
फ़रार	फ़ौज	उफ़
قَدر	قَرار	قَد
क़द्र	क़रार	क़द
چاقو	فِراق	صِرف
चाक़ू	फ़िराक़	सिर्फ़

اَفسَر	فَرض	سَفَر
अफ़सर	फ़र्ज़	सफ़र

शब्दावली

वर्ण (अक्षर)	حَرف	मुस्लिम कैलेंडर के एक महीने का नाम	صَفَر
पन्ना, परत	وَرَق	फाँक	قاش
आराम	قَرار	गरिमा	وقار

पाठ 8

लाम ل और मीम م

लाम ل और **मीम** م दो अलग अलग वर्ण हैं। इन दोनों के आकार भिन्न हैं, हालाँकि इन्हें यहाँ एक साथ लिया गया है लेकिन इन्हें एक समूह के वर्ण के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए।

लघु रूप	ध्वनि	नाम	वर्ण
ﻟ	ल	लाम	ل
ﻣ	म	मीम	م

उदाहरण

अंत	मध्य	आरंभ
سِل	اَلِف	لاڑ
सिल	अलिफ़	लाड़

آم	شِمال	مال
आम	शिमाल	माल

कुछ और उदाहरण

دام	قِسْم	دِل
दाम	क़िस्म	दिल
دَلدَل	لالَچ	قَلَم
दलदल	लालच	क़लम

शब्दावली

उत्तर दिशा	شِمال	उर्दू का एक अक्षर (वर्ण)	اَلِف

❖ ❖ ❖

पाठ 9

काफ़ ک **समूह**

इस बात पर ध्यान दें कि **काफ़** ک का पहला लघु रूप ﻛ तब इस्तेमाल किया जाता है जब उस वर्ण के बाद **अलिफ़** ا और **लाम** ل आता है। दूसरा लघु रूप ﮐ बाक़ी वर्णों के साथ लिखा जाता है।

लघु रूप	**ध्वनि**	**नाम**	**वर्ण**
ﮐ / ﻛ	क	काफ़	ک
ﮔ / گـ	ग	गाफ़	گ

काफ़ ک समूह के लघु रूपों का प्रयोग ध्यान से देखें:

کام	کر
काम	कर

उदाहरण

अंत	मध्य	आरंभ
شَک	مُکّا	کام
शक	मुक्का	काम
فِکْر	شَکْل	کَل
फ़िक्र	शक्ल	कल
جَگ	سِگار	گال
जग	सिगार	गाल

कुछ और उदाहरण

راگ	ڈاک	آگ
राग	डाक	आग
گول	گُم	اَدَرک
गोल	गुम	अदरक

مُلک	کمر	لوگ
मुल्क	कमर	लोग
ساگ	چوک	کالا
साग	चौक	काला

इस बात पर ध्यान दें कि ک और گ को एक रेखा के द्वारा पहचाना जाता है जिसे मरकज़ कहते हैं। सबसे पहले वर्ण का मूल रूप लिखा जाता है, ٮ उसके बाद उस वर्ण के ऊपर दाएँ से बाईं तरफ़ मरकज़ (तिरछी लकीर) लगाया जाता है। ک में एक मरकज़ होता है और گ में दो मरकज़ होते हैं।

	ک	ٮ
گ	ک	ٮ

❖ ❖ ❖

पाठ 10

बे ب समूह

बे ب समूह के वर्णों के तीन लघु रूप हैं। इन्हें शब्द के शुरू में और बीच में इस्तेमाल किया जाता है। इस पाठ में उनके विशिष्ट प्रयोगों के बारे में चर्चा की जा रही है।

लघु रूप	ध्वनि	नाम	वर्ण
بـ / ـبـ / ـب	ब	बे	ب
پـ / ـپـ / ـپ	प	पे	پ
تـ / ـتـ / ـت	त	ते	ت
ٹـ / ـٹـ / ـٹ	ट	टे	ٹ
ثـ / ـثـ / ـث	स	से	ث

लघु रूपों के प्रयोग

बे ب समूह के तीन लघु रूपों को इस प्रकार लिखा जाता है –

(i) ﺑ यह लघु रूप तब इस्तेमाल किया जाता है जब बे ب समूह के वर्ण के बाद **अलिफ़, दाल** د समूह के वर्ण, **रे** ر समूह के वर्ण, **काफ़** ک समूह के वर्ण तथा **बे** ب समूह के अन्य वर्ण आते हैं।

उदाहरण के लिए नीचे दिए गए शब्दों को देखा जा सकता है।

بکرا	پر	پتلا	بارِش
बकरा	पर	पतला	बारिश

ﺑ

(ii) लघु रूप का इस्तेमाल तब किया जाता है जब **बे** ب समूह के वर्णों के बाद **सीन** س **स्वाद** ص और **फ़े** ف समूह के वर्ण आएँ। इसके अलावा जब **बे** ب समूह के वर्ण के बाद **छोटी ये** , ی **बड़ी ये** , ے **ऐन** ع तथा **तोए** ط समूह के वर्ण (जिनकी चर्चा अगले पाठों में की जाएगी) आएँ,

तब भी इस लघु रूप का इस्तेमाल होता है।

उदाहरण के लिए नीचे दिए गए शब्दों पर ध्यान दें।

بَس	پوتا	توپ
बस	पोता	तोप

(iii) तीसरे लघु रूप का इस्तेमाल तब किया जाता है जब **बे** ب समूह के वर्ण के बाद **जीम** ج **मीम** م वर्ण आएँ और **छोटी हे** ہ तथा **दो चश्मी** हे ھ आएँ। इन वर्णों के बारे में बाद के पाठों में चर्चा की जाएगी।

بُخار	بم
बुख़ार	बम

ध्यान दें कि **सीन** س, **स्वाद** ص और **से** ث का उच्चारण एक जैसा है। ये तीनों **'स'** की आवाज़ देते हैं। जैसे हिंदी के सच, मौसम, रस आदि शब्द।

उदाहरण

अंत	मध्य	आरंभ
کَب कब	خَبَر ख़बर	بَکرا बकरा
جَواب जवाब	آبشار आबशार	بَس बस
سَبَب सबब	صُبح सब्ह	بَم बम

گَپ गप	چَپَّل चप्पल	پاس पास
روپ रूप	آپَس आपस	پوپ पोप

چُپ	چِپچِپا	پَمپ
चुप	चिपचिपा	पंप

❖ ❖ ❖

سَخْت	سِتارا	تالا
सख़्त	सितारा	ताला
بُت	اِتوار	تول
बुत	इतवार	तोल
وَقْت	خَتْم	تَخْت
वक़्त	ख़त्म	तख़्त

❖ ❖ ❖

چِمٹا	لَٹّو	ٹَب
चिमटा	लट्टू	टब

نَٹ	کَٹورا	ٹوکرا
नट	कटोरा	टोकरा
چاٹ	چَٹَخ	ٹَماٹَر
चाट	चटख़	टमाटर

❖ ❖ ❖

ثَمَر	ثَواب	ثابِت
समर	सवाब	साबित

❖ ❖ ❖

कुछ और उदाहरण

دَولَت	خَبَر	بَچَپَن
दौलत	ख़बर	बचपन

دوسْت दोस्त	بَدبُو बदबू	مُفْت मुफ़्त
حُکُومَت हुकूमत	اُستاد उस्ताद	دَوات दवात
بُخار बुख़ार	تَلوار तलवार	اِقبال इक़बाल
اَسپَتال अस्पताल	رُخصَت रुख़सत	دَرَخْت दरख़्त

शब्दावली

प्रस्थान	رُخصَت	कारण	سَبَب
पेड़	دَرَخت	मूर्ति	بُت
संपन्नता	اِقبال	फल	ثَمَر
सुबह	صبح	पुण्य	ثَواب
झरना	آبشار	शासन	حُکُومَت
		शिक्षक	اُستاد

❖ ❖ ❖

पाठ 11

नून ن

इस पाठ में **नून** ن वर्ण की चर्चा की गई है। **नून** ن के लघु रूप **बे** ب समूह के लघु रूपों की तरह होते हैं तथा ये उन्हीं के जैसे नियमों का पालन करते हैं।

लघु रूप	**ध्वनि**	**नाम**	**वर्ण**
ن / ـنـ / نـ	न	नून	ن

नीचे दिए गए शब्दों में प्रयुक्त **नून** ن के लघु रूपों की तुलना कीजिए।

نمک نوک نام

उदाहरण

अंत	**मध्य**	**आरंभ**
کان	جنّت	ناک
कान	जन्नत	नाक

جان	اِنکار	نوک
जान	इनकार	नोक
خوُن	جَنم	نَمک
ख़ून	जनम	नमक

कुछ और उदाहरण

اِنسان	اَنجام	نَفرَت
इन्सान	अंजाम	नफ़रत
بَدَن	صابُن	تَمَنّا
बदन	साबुन	तमन्ना

❖ ❖ ❖

नुन ग़ुन्ना ں

जैसा कि आप जानते हैं, हिंदी में स्वरों को अनुनासिक

(बोलते समय नाक से आवाज़ निकलना) तरीक़े से भी बोला जाता है। जैसे **आँख, गई, पहुँचा, ऊँट, गोंद, गेंद, कौंधना, मैं** आदि। इसी तरह उर्दू के स्वरों की अनुनासिकता को नीचे दिए तरीक़े से प्रदर्शित किया गया है।

अंत	**मध्य**
ں	نٚ
	نٚ
	نٚ

जैसा कि पहले दर्शाया गया है, अगर अनुनासिकता शब्द के बीच में आती है तो उलटे जज़्म के साथ नून ن के लघु रूपों का इस्तेमाल किया जाता है। यदि अनुनासिकता शब्द के अंत में आती है तब नून ں बिना बिंदु के इस्तेमाल किया जाता है।

उदाहरण

अंत	**मध्य**
ماں	بانٚس
माँ	बाँस

جواں	سانس
जवाँ	साँस

स्वर से शुरू होने वाले सभी शब्द **अलिफ़** ا के साथ लिखे जाते हैं। यह नियम अनुनासिक स्वरों पर भी लागू होता है। इस बात को समझने के लिए दिए गए उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए।

آنگن	اونچا	اونٹ
आँगन	ऊँचा	ऊँट
اِنچ	آنچ	آنسو
इंच	आँच	आँसू
اَنگور	آنت	اَنبار
अंगूर	आँत	अंबार

शब्दावली :

जवान	جَواں	स्वर्ग	جَنّت
ढेर	اَنبار	अंत	اَنجام
		इच्छा	تَمنّا

❖ ❖ ❖

पाठ 12

छोटी ये ی और बड़ी ये ے

इस पाठ में जिन वर्णों के बारे में बताया जा रहा है वे दीर्घ स्वर और अर्ध स्वर – दोनों रूपों में कार्य करते हैं। इन दोनों वर्णों के लघु रूपों पर अधिक ध्यान देने की ज़रूरत है क्योंकि ये शब्द के शुरू में बीच में, और अंत में अलग–अलग रूपों में इस्तेमाल होते हैं।

1) **छोटी ये** ی वर्ण **'ई'** स्वर (हिंदी में ईख, नीम, गई) तथा अर्ध स्वर **य** (हिंदी में यमुना, दिया) की आवाज़ देता है।

   जब **छोटी ये** ی **'ई'** के लिए इस्तेमाल की जाती है और दूसरे वर्णों के साथ जुड़ती है तो इसके लघु रूप में बिंदु के साथ खड़ा **ज़ेर** ٖ लगाया जाता है।

2) **बड़ी ये** ے वर्ण दो भिन्न स्वरों की आवाज़ देती है – **ए** (हिंदी में एड़ी केला, मेला, में) तथा **ऐ** (हिंदी में ऐसा, मैला,

पैसा।)

ए स्वर से अलग, जब **बड़ी ये** ے का इस्तेमाल **'ऐ'** के लिए किया जाता है तो पहले वाले वर्ण के ऊपर **ज़बर** [ـَ] लगाया जाता है।

दी गई तालिका को ध्यान से पढ़िए। यह समझने की कोशिश कीजिए कि दिए गए वर्णों के संदर्भ में **छोटी ये** ی और **बड़ी ये** ے दोनों के लघु रूप उसी तरह बदलते हैं जिस तरह **बे** ب समूह के वर्ण बदलते हैं।

लघुरूप

अंत	**मध्य**	**आरंभ**
ـی	ـیـ	یـ

ध्वनि	**नाम**	**वर्ण**
य	छोटी ये	ی

छोटी ये के उदाहरण : अर्ध स्वर 'य' के रूप में

अंत	मध्य	आरंभ
*	دَیار दयार	یاد याद
	کیوڑا केवड़ा	یَوم यौम
	پیار प्यार	یَمَن यमन

* अर्ध स्वर **'य'** के रूप में **छोटी ये ی** का इस्तेमाल शब्द के अंत में नहीं किया जाता।

छोटी ये ی के उदाहरण दीर्घ स्वर 'ई' के रूप में

अंत	मध्य	आरंभ
بَستی	تین	ایثار
बस्ती	तीन	ईसार
دادی	جیوَن	ایشوَر
दादी	जीवन	ईश्वर
بجلی	نیم	ایجاد
बिजली	नीम	ईजाद

बड़ी ये ے के उदाहरण दीर्घ स्वर 'ए' के रूप में

अंत	मध्य	आरंभ
اُجالے	دینا	ایک
उजाले	देना	एक

نیچے नीचे	دیش देश	ایشیا एशिया
بڑے बड़े	بیچنا बेचना	ایجنٹ एजेंट

❖ ❖ ❖

दीर्घ स्वर 'ऐ' के रूप में बड़ी ये ے

अंत	मध्य	आरंभ
مَے मै	مَینا मैना	اَیٹم ऐटम
شَے शै	جَیسا जैसा	اَیسا ऐसा
لَے लै	پَیمان पैमान	اَیمن ऐमन

शब्दावली

भाग्यवान•	اَیمَن	निस्वार्थता	ایثار
चीज़	شَے	दृश्य	دید
लय	لَے	आविष्कार	ایجاد
प्यार	پیار	शराब	مَے
		प्रतिज्ञा	پیمان

❖ ❖ ❖

पाठ 13

ऐन ع समूह

'ऐन' ع समूह अपने आप में विशिष्ट है। उसकी विशिष्टता यह है कि इस समूह का पहला वर्ण **'ऐन'** ع किसी भी स्वर की आवाज़ दे सकता है। इस समूह का दूसरा वर्ण **'ग़ैन'** غ एक व्यंजन है जो **'ग़'** की आवाज़ देता है।

लघु रूप	ध्वनि	नाम	वर्ण
عـ		ऐन	ع
غـ	ग़	ग़ैन	غ

उच्चारण पर टिप्पणी – **'ग़ेन'** एक غ "सघोष कंठ्य संघर्षी" ध्वनि है। इस ध्वनि का उच्चारण जीभ के पिछले हिस्से से होता है। **ग़** बोलते समय जीभ गले के ऊपरी रास्ते को

लगभग बंद कर देती है। जैसा कि पाठ 7 में बताया जा चुका है, **ज – ज़** और **फ – फ़** की तरह **ग** और **ग़** में अंतर है।

इन वर्णों के लघु रूप शब्द के शुरू, बीच और अंत में भिन्न–भिन्न हैं।

अंत	**मध्य**	**आरंभ**
مَنَع	بَعد	عام
मना	बाद	आम
تیَغ	بَغَل	غَم
तेग़	बग़ल	ग़म

ध्यान दें कि शब्द के अंत में जब **ऐन** ع समूह के वर्णों से पहले योजक आते हैं तब इस अंतिम स्थान वाले लघु रूप ـع का इस्तेमाल किया जाता है। जब **ऐन** ع समूह के वर्ण से पहले अयोजक आता है तब वर्ण का पूरा रूप इस्तेमाल

किया जाता है।

उर्दू में **ऐन** ع वर्ण का उच्चारण शब्द के अन्य स्वरों के साथ मिलाकर किया जाता है। यह प्रायः पहले या बाद वाले स्वर के साथ मिल जाता है।

उदाहरण

عَورَت	عید	عادَت
औरत	ईद	आदत
عَقْل	عَیش	عِراق
अक़्ल	ऐश	इराक़
شِعر	عُرْف	عَرَب
शेर	उर्फ़	अरब
شُروع	جَعلی	مُعَمّا
शुरू	जाली	मोअम्मा

शब्दावली

अरब (का)	عَرَب	बग़ल	بَغَل
पहेली	مُعَمّا	तलवार	تَیغ
नक़ली	جَعلی	एक देश का नाम	عِراق
दीपक	شَمع	(उर्दू ग़ज़ल में) पद	شِعر

❖ ❖ ❖

पाठ 14

हम्ज़ा ء

हम्ज़ा ء का इस्तेमाल एक साथ आने वाले दो स्वरों के लिए किया जाता है। **हम्ज़ा** ء हमेशा दूसरे स्वर की तरफ़ संकेत करता है। अपवाद स्वरूप कुछ को छोड़कर यह हमेशा **बे** ب समूह के किसी भी लघु रूप के ऊपर लगता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि **हम्ज़ा** ء को लघु रूप की सहायता से लिखा जाता है।

	लघु रूप
غائب ग़ाइब	ٮ
آئی आई	ﺑ
رائج राइज	ء

ऊपर दिए गए उदाहरणों में इस बात पर ध्यान दें कि **हम्ज़ा** ٔ को पाठ 10 में बताए गए नियम के अनुसार किस प्रकार शब्द के बीच में लघु रूप के ऊपर लिखा जाता है।

उदाहरण

گئو

गऊ

यहाँ **वाओ** و से पहले योजक वर्ण **गाफ़** گ आया है। स्वरों के क्रम की उपस्थिति को दर्शाने के लिए उनके बीच में लघु रूप **हम्ज़ा** ٔ का निशान लगाया जाता है।

तुलना कीजिए

گو

गो

यहाँ **वाओ** و **गाफ़** گ के साथ मिलता है। लघु रूप के साथ **हम्ज़ा** ء का न होना यह दर्शाता है कि यहाँ केवल एक स्वर है।

जिन शब्दों में **वाओ** و **छोटी ये** ی और बड़ी ये ے से पहले अयोजक आते हैं, वहाँ **हम्ज़ा** ء को बिना किसी लघु रूप के दूसरे स्वर के ऊपर लगाया जाता है।

उदाहरण

آئی	چارپائی	آؤ	گاؤ
आई	चारपाई	आओ	गाओ

कुछ और उदाहरण

آئیں	آئے	چائے
आएँ	आए	चाए

جائیے	روئیے	سوئیے
जाइए	रोइए	सोइए
مُمبَئی	دَوائی	جائز
मुंबई	दवाई	जाइज़
گَئی	کَئی	تیئیس
गई	कई	तेईस
نَئے	گَئے	مَئی
नए	गए	मई

शब्दावली

प्रचलित	رائج	जायज़/वैध	جائز
		ग़ायब	غائب

❖ ❖ ❖

पाठ 15

छोटी हे ہ

इस पाठ में **छोटी हे** ہ वर्ण के बारे में चर्चा की गई है। यह व्यंजन एवं स्वर दोनों को दर्शाता है। व्यंजन के रूप में इसका उच्चारण **'ह'** (हिंदी में हरियाली, हाल) की तरह किया जाता है। स्वर के रूप में इसका उच्चारण **'अ'** और **'ए'** की तरह होता है।

ध्वनि	**नाम**	**वर्ण**
ह एवं अ, ए	छोटी हे	ہ

लघु रूप

अंत	**मध्य**	**आरंभ**
ـہ	ـہـ	ہـ / ہـ

उदाहरण

अंत	मध्य	आरंभ
جگہ	نہر	ہل
जगह	नहर	हल

शब्द के शुरू में लघु रूप ہ का इस्तेमाल **अलिफ़** ا, **दाल** د, समूह, **रे** ر, समूह, **काफ़** ک, समूह और **लाम** ل, के साथ किया जाता है।

बाक़ी वर्णों के साथ दूसरे लघु रूप ہ का इस्तेमाल किया जाता है। ध्यान रखें कि **छोटी हे** ہ तथा **हे** ح का उच्चारण (जिसकी चर्चा पाठ 4 में की गई है) **'ह'** ध्वनि के लिए समान रूप से किया जाता है। **तुलना कीजिए**

ہل	حل
हल	हल
(खेत जोतने का औज़ार)	(समाधान)

स्वर के रूप में छोटी हे ہ

स्वर के रूप मे **छोटी हे** ہ का उच्चारण केवल शब्द के अंत में किया जाता है। इस बात का ध्यान रखें कि शब्द के अंत में आने वाले **छोटी हे** ہ के लघु रूप का इस्तेमाल स्वर की तरह किया जाता है। ऐसे में लघु रूप के नीचे आने वाले हुक का इस्तेमाल नहीं किया जाता।

तुलना

کے	کہ
के	कह

स्वर के रूप में **छोटी** हे ہ का **'अ'** लघु स्वर के तौर पर इस्तेमाल

ناغہ	نغمہ	عُمدہ	پَردہ
नागा़	नग़मा	उम्दा	पर्दा

स्वर के रूप में छोटी हे ه का 'ए' के लिए इस्तेमाल

اَگرچہ	چُنانچہ	تاکہ	بلکہ	کہ
अगरचे	चुनाँचे	ताके	बल्के	के

कुछ और उदाहरण

قِلعہ	غُنچہ	عہدہ
क़िला	ग़ुंचा	ओहदा
ہَمیشہ	جُمعہ	ذَریعہ
हमेशा	जुमा	ज़रिया
اَفرِیقہ	کولکتہ	پٹیالہ
अफ़्रीक़ा	कोलकता	पटयाला

शब्दावली

बल्कि	بلکہ
तो	چُنانچہ
हालाँकि	اگرچہ
कली	غُنچہ
शुक्रवार	جُمعہ

नाग़ा (काम से ग़ैरहाज़िर होना)	ناغہ
बढ़िया	عُمدہ
गाना	نغمہ
ग़ुब्बारा	غُبّارہ
कि	کہ

पाठ 16

तोए ط और ज़ोए ظ

जैसा कि नीचे बताया गया है कि **तोए** ط और **ज़ोए** ظ जैसे वर्णों के उच्चारण जैसे और भी बहुत से वर्ण उर्दू में मौजूद हैं। उर्दू सीखने वालों को उर्दू के ऐसे शब्दों की सही वर्तनी को याद करना होगा जिनमें **तोए** ط और **ज़ोए** ظ जैसे समान ध्वनि वाले वर्णों का इस्तेमाल हुआ हो।

ध्वनि	**नाम**	**वर्ण**
त	तोए	ط
ज़	ज़ोए	ظ

उदाहरण

अंत	**मध्य**	**आरंभ**
خَط	وَطَن	طاقَت
ख़त	वतन	ताक़त
لَفْظ	نَظَر	ظالِم
लफ़्ज़	नज़र	ज़ालिम

तोए ط और **ज़ोए** ظ का कोई लघु रूप नहीं है।

तोए वर्ण ط **ते** ت के समान बोला जाता है और **ज़ोए** ظ वर्ण **ज़्वाद** ض **ज़ाल** ذ और **जे** ز की तरह बोला जाता है।

उदाहरण :

نَذر / نَظَر — नज़र / नज़्र

تین/ طین — तीन/ तीन

कुछ और उदाहरण

نُقطہ	ظاہِر	غَلَط
नुक़्ता	ज़ाहिर	ग़लत
حِفاظَت	اِنتِظام	تَلَفُّظ
हिफ़ाज़त	इंतज़ाम	तलफ़्फ़ुज़
دَستخَط	طَرِیقہ	خَطَرناک
दस्तख़्त	तरीक़ा	ख़तरनाक

शब्दावली

शब्द	لَفظ	मातृभूमि	وَطَن
उच्चारण	تَلَفُّظ	चिट्ठी	خَط
सुरक्षा	حِفاظَت	कूर	ظالِم
हस्ताक्षर	دَستخَط	दृष्टि	نَظَر

तीन	تین	भेंट	نَذر
ज़, फ़ आदि में लगने वाला बिंदु	نُقطہ	मिट्टी	طین

❖ ❖ ❖

पाठ 17

दो चश्मी हे ھ

उर्दू में हिंदी की तरह महाप्राण व्यंजनों (ख, झ, थ, भ आदि) के लिए कोई अलग वर्ण नहीं है। महाप्राण व्यंजनों (जिनके बोलने में हवा ज़्यादा निकलती है) की तरफ़ संकेत करने के लिए वर्ण के साथ एक चिह्न लगाया जाता है जिसे **दो चश्मी हे** ھ कहा जाता है।

1) अयोजकों के साथ दो चश्मी हे ھ

ڑھ	ڈھ	دھ
ढ़	ढ	ध

उदाहरण

رادھا

ध्यान दें कि **दो चश्मी हे** ھ दिए गए वर्णों के साथ

किस प्रकार जुड़ता है जबकि वह पहले वर्ण के लिए महाप्राणत्व को संकेत करता है।

2) योजकों के साथ दो चश्मी हे ھ

दो चश्मी हे ھ साथ वाले वर्णों के साथ जुड़ता है और महाप्राणत्व को दर्शाता है।

बे ب, **जीम** ج, और **काफ़** ک समूह के वर्णों के महाप्राणत्व को किस तरीक़े से दर्शाया जाता है – इस बात पर ज़्यादा ग़ौर कीजिए।

क) **बे** ب समूह के वर्णों के महाप्राणत्व को निम्न तरीक़े से दर्शाया गया है–

भ بھ

फ پھ

थ تھ

ठ ٹھ

ख) **जीम** ج समूह के वर्णों के महाप्राणत्व को इस प्रकार दिखाया गया है–

झ جھ

छ چھ

ग) **काफ़** ک समूह के वर्णों के महाप्राणत्व को इस प्रकार दिखाया गया है

ख کھ

घ گھ

उदाहरण

अंत	**मध्य**	**आरंभ**
بُدھ	اَندھا	دَھن
बुध	अंधा	धन

رادھا राधा	مونڈھا मोंढ़ा	ڈھول ढोल
مُجھ मुझ	بُجھنا बुझना	جَھنڈا झंडा
ریچھ रीछ	بَچھڑا बछड़ा	چھڑی छड़ी
پنکھ पंख	پنکھا पंखा	کھیر खीर
سونگھ सूँघ	کنگھا कंघा	گھڑی घड़ी
چُبھ चुभ	گوبھی गोभी	بھالو भालू

	گُپھا गुफा	پھُول फूल
رَتھ रथ	ماتھا माथा	تھَن थन
مَٹھ मठ	بَیٹھنا बैठना	ٹھَگ ठग

❖ ❖ ❖

पाठ 18

इज़ाफ़त एक व्याकरणिक बिंदु है जो सामान्य रूप से 'संबंध' को दर्शाता है। उदाहरण के लिए यह **'का'** کا، کی، کے के अर्थ को बताता है। इसे तीन भिन्न चिह्नों द्वारा दर्शाया जाता है। तीनों चिह्नों को **'ए'** के रूप में उच्चरित किया जाता है।

1) इज़ाफ़त–ज़ेर ِ

क) यदि समास शब्द (समस्त पद) की नियंत्रित संज्ञा (वह संज्ञा जो हमेशा पहले आती है) के अंत में व्यंजन वर्ण आता है तब पहले शब्द के अंतिम वर्ण के नीचे ज़ेर का चिह्न लगाया जाता है।

उदाहरण के लिए

دردِ دل	दर्दे – दिल
دل کا درد	दिल का दर्द

कुछ और उदाहरण

موجِ دریا	رازِ دِل
मौजे – दरया	राज़े – दिल
عَرقِ گلاب	شاخِ گُل
अरक़े – गुलाब	शाख़े – गुल

ख) यदि सामासिक शब्द की नियंत्रित संज्ञा के अंत में **एन** ع आता है तब **एन** ع के नीचे ज़ेर लगाया जाता है।

उदाहरण के लिए–

شمعِ محفِل शमे – महफ़िल

محفِل کی شمع महफ़िल की शमा

اِطّلاعِ عام

इत्तिलाए – आम

ग) यदि सामासिक शब्द की नियंत्रित संज्ञा के अंत में **छोटी ये** ی आती है तब **ज़ेर** को **छोटी** ये के नीचे लगाया जाता है।

उदाहरण के लिए

بیمارِیِ دِل बीमारिये – दिल

دِل کی بیماری दिल की बीमारी

خوبیِ قِسمَت کُرسیِ صَدارَت

कुर्सिये – सदारत ख़ूबीये – क़िस्मत

2) इज़ाफ़त – हम्ज़ा

जब सामासिक शब्द की नियंत्रित संज्ञा के अंतिम वर्ण के ऊपर हम्ज़ा चिह्न लगाया जाता है तब उस चिह्न को **इज़ाफ़त – हम्ज़ा** कहा जाता है। **इज़ाफ़त – हम्ज़ा** तीन प्रकार का होता है।

क) यदि सामासिक शब्द की संज्ञा के अंत में **छोटी हे ہ** (स्वर के रूप में) आता है तब **हम्ज़ा** चिह्न को उस वर्ण के ऊपर लगाया जाता है।

उदाहरण के लिए

نغمۂ شادی — नग़मए – शादी

شادی کا نغمہ — शादी का नग़मा

جذبۂ دِل — जज़्बए–दिल

قطرۂ خون — क़तरए–ख़ून

टिप्पणी – यदि संज्ञा का अंतिम वर्ण **छोटी हे ہ** (व्यंजन के

रूप में) पर समाप्त होता है तब इज़ाफ़त – ज़ेर का इस्तेमाल किया जाता है।

उदाहरण

ماہِ نَو	راہِ وَفا
माहे–नौ	राहे–वफ़ा

ख) यदि सामासिक शब्द की पहली संज्ञा के अंत में **बड़ी ये** ے वर्ण आता है तब **हम्ज़ा** ٔ चिह्न का इस्तेमाल किया जाता है।

उदाहरण

شئے لطیف

शाए–लतीफ़

ग) यदि सामासिक शब्द की नियंत्रित संज्ञा के अंत में **अलिफ़** और **वाओ** वर्ण आते हैं तब **हम्ज़ा** ٔ के साथ **बड़ी ये**

ے वर्ण जोड़ा जाता है।

उदाहरण के लिए

صَدائے وَطَن   सदा–ए–वतन

وَطَن کی صَدا   वतन की सदा

कुछ और उदाहरण

سَزائے مَوت	بوُئے گُل	آبروُئے وَطَن
सज़ाए–मौत	बूए–गुल	आबरूए–वतन

इस बात पर ध्यान दें कि कुछ छपी हुई सामग्री में अक्सर **बड़ी ये** ے के ऊपर **हम्ज़ा** का इस्तेमाल नहीं किया जाता।

3) अलिफ़–लाम का इज़ाफ़त ال

अरबी के सामासिक शब्दों में पहले शब्द तथा नियंत्रित सामासिक संज्ञा के बीच में **अलिफ़ लाम** ال की इज़ाफ़त का

इस्तेमाल किया जाता है।

क) अलिफ़ लाम को न बोलना

यदि सामासिक शब्द की नियंत्रित संज्ञा इन व्यंजनों से शुरू होती है, जैसे – **ते ت**, **तोए ط**, **दाल د**, **सीन س**, **से ث**, **स्वाद ص**, **ज़्वाद ض**, **ज़े ز**, **ज़ाल ذ**, **ज़ोए ظ**, **लाम ل**, **रे ر** और **नून ن** (इन्हें हुरूफ़–ए–शमसी حُرُوفِ شمسی भी कहा जाता है) तब इन वर्णों को दोहराया जाता है। साथ ही पहले शब्द के अंतिम वर्ण पर लघु स्वर **'उ'** के लिए **पेश** चिह्न लगाया जाता है। इस तरह के सामासिक शब्दों में **अलिफ़–लाम** का उच्चारण नहीं किया जाता।

उदाहरण

دارُالسَّلطَنَت = سَلطَنَت + ال + دار

दारुस–सल्तनत = सल्तनत + ال + दार

उदाहरण के लिए

سَلطَنَت کی جَگہہ सल्तनत की जगह (राजधानी)

عبدُ اللہ	نِظامُ الدّین
अब्दुल्लह	निज़ामुद–दीन

ख) अलिफ़ को न बोला जाए और लाम को बोला जाए

यदि सामासिक शब्द की नियंत्रित संज्ञा (दूसरा शब्द) बाक़ी व्यंजनों से शुरू होती है, जैसे **अलिफ़** ا, **बे** ب, **बड़ी हे** ح, **छोटी हे** ہ, **जीम** ج, **ख़े** خ, **एन** ع, **ग़ेन** غ, **फ़े** ف, **क़ाफ़** ق, **काफ़** ک, **मीम** م, **वाओ** و और **छोटी ये** ی वर्ण (इन्हें हुरूफ़–ए–क़मरी حُرُوفِ قَمَری के नाम से जाना जाता है) तब इन व्यंजनों को दोहराया नहीं जाता। इस तरह के

सामसिक शब्दों में **लाम** को बोला जाता है जबकि **अलिफ़** को नहीं बोला जाता।

उदाहरण

دار الحکومت	=	حکومت	+	ال	+	دار
दारुलहुकूमत	=	हुकूमत	+	उल	+	दार

जैसे حکومت کی جگہ हुकूमत की जगह (राजधानी)

कुछ और उदाहरण इस प्रकार हैं –

عید الفطر	بین الاقوامی
ईदुल–फ़ितर	बेनुल–अक़वामी

ग) वाओ के बाद आने वाला अलिफ लाम

कुछ सामासिक शब्दों में पहले संज्ञा शब्द के अंतिम वर्ण

वाओ को लघु स्वर **'उ'** की तरह बोला जाता है।

उदाहरण

اَبُوالکَلام अबुलकलाम

घ) छोटी ये के बाद आने वाला अलिफ़ लाम

यदि पहला शब्द **छोटी ये** पर समाप्त होता है, तब वह वर्ण बोला नहीं जाता तथा **'अ'** की आवाज़ देने वाले पहले वर्ण के ऊपर ज़बर चिह्न लगाया जाता है।

उदाहरण

حَتّی اِلاِمکان

हत्तल ईमकान

म) कुछ शब्दों में पूर्वसर्ग के बाद लघु स्वर का उच्चारण करने के लिए ज़ेर का चिह्न लगाया जाता है।

उदाहरण

بِالکُل	بِالاِرادہ	بِالآخِر
बिल्कुल	बिलिरादा	बिलआख़िर
بِالغَرض	بِالخُصوص	بِالجَبر
बिल्ग़र्ज़	बिल्ख़ुसूस	बिल्जब्र

शब्दावली

सार्वजनिक सूचना	اِطّلاعِ عام	दिल का राज़	رازِ دِل
दिल की बीमारी	بیمارئِ دِل	दरिया की लहरें	موجِ دریا
अच्छी क़िस्मत	خوبیٔ قِسمَت	फूलों की डाली	شاخِ گُل
ख़ून की बूँद	قطرۂ خون	गुलाब जल	عَرَقِ گلاب
ख़ुदा का बंदा	بَندۂ خُدا	आकर्षण का केन्द्र	شمعِ محفِل

देश की इज़्ज़त	آبروئے وَطن	वफ़ा का रास्ता	راہِ وفا
मृत्यु दण्ड	سَزائے موت	नया महीना	ماہِ نَو
अंतर्राष्ट्रीय	بَینُ الاقوامی	वतन की आवाज़	صَدائے وطَن
ईद (एक त्यौहार)	عیدُالفِطر	प्रेम का आरम्भ	ابتدائے عشق

❖ ❖ ❖

पाठ 19

वावो – अत्फ़ و

फ़ारसी – अरबी के कुछ समास – शब्दों में संज्ञा और विशेषण के बीच आने वाला **वाओ** و **'ओ'** की आवाज़ देता है। (जैसे हिंदी में कोना, मोटा आदि) यह **वाओ** و **वावे–अत्फ़** कहलाता है तथा योजक (दो शब्दों को जोड़ने वाला) का काम करता है।

उदाहरण के लिए

آب و ہوا — आबो–हवा

آب اور ہوا — आब और हवा

कुछ और उदाहरण

خرید و فروخت	خط و کتابت	آمد و رفت
ख़रीदो–फ़रोख़्त	ख़तो–किताबत	आमदो–रफ़्त

کم وبیش	درد وغم	مال واَسباب
कमो–बेश	दर्दो–ग़म	मालो–असबाब
شام وسحر	شب وروز	عجیب وغریب
शामो–सहर	शबो–रोज़	अजीबो–ग़रीब

नोट – अक्सर उर्दू सीख रहे लोग **वावे – अत्फ़** का उच्चारण **'ओ'** की बजाय **'व'** करते हैं, या **'ओ'** का उच्चारण दोनों संज्ञाओं से अलग करके अलग शब्द की तरह करते हैं। **'ओ'** का उच्चारण ऐसे करना चाहिए कि वह पहली संज्ञा का अंतिम अक्षर लगे। इस प्रकार आबो–हवा सही है, आब–ओ–हवा और आब–व–हवा ग़लत है।

वाओ و से संबंधित कुछ और बिंदु

क) फ़ारसी के कुछ शब्दों में **वाओ** و का उच्चारण **ख़े** خ के बाद, लघु स्वर की तरह होता है।

उदाहरण

خورشید	خوش	خود
ख़ुर्शीद	ख़ुश	ख़ुद

ख) कुछ शब्दों में जब **वाओ** و के बाद अलिफ़ आता है तो वह **वाओ** अनुच्चरित (लिखा हो मगर बोला न जाए) होता है। उदाहरण के लिए خواب को **ख़ाब** की तरह बोला जाता है।

उदाहरण

خواہش	درخواست	تنخواہ
ख़ाहिश	दरख़ास्त	तनख़ाह

ग) कुछ शब्दों के अंत में अर्ध स्वर **व** के रूप में **वाओ** و आता है।

عَضْوْ　　　لَغْوْ　　　نَحْوْ

अज़्व　　　लग़व　　　नहव

तन्वीन　ًا

संज्ञा से कियाविशेषण बनाते समय अरबी के कुछ शब्दों में तन्वीन (दो ज़बर संकेतों के साथ अलिफ़ वर्ण) आगे जोड़ा जाता है। इस प्रत्यय (शब्द के पीछे जुड़ने वाले शब्दांश) को 'अन' की तरह उच्चरित किया जाता है। (हिंदी में बचपन) तथा इसे **तन्वीन** के नाम से जाना जाता है।

उदाहरण के लिए

مَجْبُوراً = ًا + مَجْبُور

मजबूरन = अन + मजबूर

कुछ और उदाहरण

أُصُولاً　　　اِحْتِيَاطاً　　　اِتِّفَاقاً

उसूलन　　　एहतियात　　　इत्तफ़ाक़न

عموماً	خصوصاً	تقریباً
अमूमन	खुसूसन	तक़रीबन
یقیناً	مثلاً	فوراً
यक़ीनन	मसलन	फ़ौरन

शब्दावली

दिन–रात	شب و روز	जलवायु	آب و ہوا
संयोग से	اتّفاقاً	आवाजाही / आना–जाना	آمدورفت
सावधानी के लिए	احتیاطاً	पत्राचार	خط و کتابت
मूलतः	اُصولاً	सामान	مال و اسباب
लगभग	تقریباً	लगभग	کم و بیش

خُصوصاً	विशेष रूप से	دَرخواست	प्रार्थनापत्र
مَثلاً	उदाहरण के लिए	نحو	व्याकरण
یَقیناً	निस्संदेह	لغوْ	बकवास
خورشید	सूर्य	عَضوْ	अंग
تنخواہ	आय		

❖ ❖ ❖

पाठ 20

उर्दू भाषा में दो ध्वनियों में अंतर करना बहुत ज़रूरी है। कई बार शब्द का ग़लत उच्चारण करने पर अर्थ बदल जाता है। नीचे दिए गए उदाहरणों में भ्रांति पैदा करने वाले व्यंजनों को दिया गया है। इन **व्यंजन–युग्मों** वाले शब्दों के अर्थ और वर्तनी के अंतर पर ध्यान दीजिए। संभव है कि ऐसे वर्णों वाले शब्दों का उच्चारण भाषा सीखने वालों के द्वारा एक ही तरीक़े से किया जाए।

ق / ک :

क़   क

قدم/کدم	قمر/کمر	قول/کول
कदम/ क़दम	कमर/ क़मर	कौल/ क़ौल
مقرر/مکرر	نقطہ/نکتہ	
मुकर्रर/ मुक़र्रर	नुक्ता/ नुक़्ता	

ز، ذ، ض، ظ / ج :

ذال / جال

जाल / ज़ाल

ذال/جال

ज़ाल / जाल

زَن/جَن

जन/ ज़न

زَنگ/جَنگ

जंग/ ज़ंग

بازی/باجی

बाजी/ बाज़ी

سَزا/سَجا

सजा/ सज़ा

ذَلیل/جَلیل

ज़लील / जलील

نَظم/نَجم

नज्म/ नज़्म

راز/راج

राज/ राज़

گَز/گَج

गज/ गज़

خ / کھ :

ख़ ख

خار/کھار
ख़ार/ खार

خال/کھال
ख़ाल/ खाल

خان/کھان
ख़ान/ खान

خانہ/کھانا
ख़ाना/ खाना

خول/کھول
ख़ोल/ खोल

غ / گ :

ग़ ग

غُل/گُل
ग़ुल/ गुल

ساغر/ساگر
साग़र/ सागर

शब्दावली

युद्ध	جَنگ
बड़ी बहन	باجی
कविता	نظم
तारा	نجم
काँटा	خار
खारापन	کھار
तिल	خال
उपनाम	خان
घर	خانہ
शोर	غُل
फूल	گُل
शराब का प्याला	ساغَر

पग / क़दम	قَدَم
फूल	کَدَم
चाँद	قَمَر
कथन	قَول
उपनाम	گَول
निश्चित / नियुक्त	مُقَرّر
दोहराना	مُکَرّر
बिंदु	نُکتہ
उर्दू का एक वर्ण	ذال
तुच्छ	ذَلیل
महान	جَلیل
महिला	زَن
व्यक्ति	جَن

उर्दू वर्णमाला का परंपरागत क्रम

ا

ب پ ت ٹ ث

ج چ ح خ

د ڈ ذ

ر ڑ ز ژ

س ش

ص ض

ط ظ

ع غ

ف ق

ک گ

ل م

ن

و

ہ

ء

ی

ے

विराम–चिह्न, संक्षिप्त रूप और अंक

विराम – चिह्न

पूर्ण विराम	۔
अल्प विराम	،
अर्ध विराम	؛
उदधरण चिह्न	“ ”
कोलन	:
प्रश्नसूचक विह्न	؟
विस्मयादिबोधक विह्न	!

संक्षिप्त रूप

तारीख़ के बाद	۱۵/اگست	/
वर्ष के लिए	۴۷؁	؁
इस्वी कैलेंडर के वर्ष का सूचक	۲۰۰۵ء	ء

इस्लामी कैलेंडर के वर्ष का सूचक	۱۰۱۵ھ	ھ
शेर या पद लिखने से पहले		؎
कवि के उपनाम का सूचक		ؔ
पैगंबर हज़रत मुहम्मद के नाम के साथ आदर सूचक चिह्न		ؐ
पैगंबर हज़रत मुहम्मद के साथियों के नाम के साथ आदर सूचक चिह्न		ؓ
स्वर्गीय मुस्लिम संतों के नाम के साथ आदर सूचक चिह्न		ؒ

अंक

۱	۲	۳	۴	۵	۶	۷	۸	۹	۰
1	2	3	4	5	6	7	8	9	0